3 ही स्वप्नों हमारे मन [illegible] होते हैं जैसे —
स्वप्न के प्रत्यय, भ्रम एवं विभ्रम विज्ञान के प्रत्यय
इत्यादि जिस स्वप्न में जिन वस्तुओं को देखते हुए
पर स्थित देखते हैं, उनका अस्तित्व मन के बाहर
नहीं होता। वास्तव में वे मन में ही स्थित होते
हैं। इससे स्पष्ट है कि इन प्रत्ययों की उत्पत्ति के लिए
बाह्य वस्तुओं की आवश्यकता नहीं होती। इसी प्रकार
बौद्ध विज्ञानवादियों ने भी स्वप्न पर आधारित तर्क
दिया है। विज्ञानवादियों के अनुसार हमारे आंतरिक
विज्ञान ही बाह्य वस्तुओं के रूप में प्रतीत होते हैं।
उल्लेखनीय है Berkeley के
के अनुसार आत्मा के लिए कुछ प्रत्यय केवल प्रदत्त
होते हैं अर्थात् कुछ प्रत्यय आत्मा के अनुभव के
विषय हैं। Berkeley बौद्ध विज्ञानवादियों के विपरीत
बाह्य वस्तुओं जैसे- नदी, पर्वत एवं अन्य प्राकृतिक
वस्तुओं के प्रत्यय का जनक (स्रष्टा) ईश्वर को मानता
है। इन वस्तुओं के प्रत्यय जीवात्माओं (finite-
minds) के लिए अनुभव के विषय तो हैं, किन्तु वे
जीवात्माओं के द्वारा उत्पन्न नहीं किए जा सकते हैं।
उनका रचयिता परमात्मा ईश्वर है। इससे स्पष्ट
है कि Berkeley जगत की वस्तुओं को सीमित मानव
के मन की कल्पना नहीं कहते हैं। वह बाह्य वस्तुओं
के स्वरूप का एक अभौतिकवादी विश्लेषण प्रस्तुत
करता है। इसकी पुष्टि Berkeley के इस कथन से
होती है कि — "मैं वस्तुओं को प्रत्यय नहीं वरन्

रहा है। Berkeley के शब्दों का उल्लेख
५ होते प्रत्यय ही वास्तविक विषय हैं।

Berkeley का प्रत्ययवाद

अपने प्रारंभकाल से ही विवादास्पद रहा है। आ-
आलोचकों ने इस सिद्धांत की कटु आलोचना की है।
कहा जाता है कि Berkeley के इस सिद्धांत के अनु-
यह होगा संगुंजन आवाज ने जमीन पर
पैर पटककर यह बतलाना चाहा कि यदि बाहय पदार्थों
का अस्तित्व नहीं है तो, जमीन पर पैर पटकने से
आवाज क्यों आयी? जानसन ने जमीन की उत्पन्न
ध्वनि के आधार पर जड़तत्व की सत्ता को सिद्ध
करना चाहा। यदि जड़तत्व नहीं है, तो Berkeley
को उसका खण्डन करने की आवश्यकता क्यों होती है।
किन्तु Berkeley के दर्शन की यह आलोचना तर्क-
संगत नहीं है क्योंकि Berkeley ने 'प्रत्यय' शब्द
का प्रयोग 'अनुभव के विषय' के रूप में किया है।
जमीन पर पैर पटकना एक प्रकार का स्पर्श-संवेदन
और उसके फलस्वरूप उत्पन्न ध्वनि श्रवण-संवेदन
के अन्तर्गत आते हैं। Berkeley ने इसी अर्थ में प्रत्यय
पद का प्रयोग किया है। वस्तुतः यह बाहय जगत
की वस्तुओं को सीमित आत्मा के मन की कल्पना
नहीं मानता। अतः जानसन के द्वारा उठाई गई आप-
त्तियाँ Berkeley की प्रत्ययवादी मान्यताओं का खं-
डन नहीं कर पाती हैं।

प्रत्ययवाद के एक दूसरी आपत्ति यह
की जाती है कि सभी वस्तुएँ प्रत्यय मात्र प्रत्ययों
का संघात होती थीं। हम प्रत्ययों को खाते हैं, प्रत्ययों
को ही पीते हैं प्रत्ययों को ही पहनते हैं, प्रत्ययों में ही